सुजाता. नुन्ना,शोधार्थिनी

(TDR-HUB-2023S895)

हिन्दी विभाग,आंध्र विश्वविद्यालय,

विशाखापट्टनम आंध्र प्रदेश

ईमेल: sujatha.nunna83@gmail.com

फ़ोन नंबर: 9989965796

भारतीय भाषाओं का सह अस्तित्व और उनका अंतर्संबंध

सार(Abstract):

समस्त संसार में भारत के अलावा कोई ऐसा देश नहीं है, जो जाति, प्रांत, भाषा एवं धर्म के लोगों को एकता के सूत्र में बाँधने में समर्थ हो। इसी गुण के कारण भारत को दुनिया में सबसे विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ है। सम्पूर्ण भारत की समस्त भाषा साहित्य को अपने में समेट कर, भारत की गरिमा को बनाये रखने में एवं बढ़ाने में भारतीय साहित्य हमेशा तत्पर है। भारत की नदियाँ राष्ट्र को प्रदेशों में विभाजित करते हुए सागर में मिलती हैं। सागर, देश का रक्षा कवच बनकर प्रदेशों को जोड़कर राष्ट्र का रुप देता है। यहाँ फ़रक नजरिये का है। भारत के मानचित्र में नदियों पर ध्यान देने से विभिन्न प्रदेश एवं सागर पर दृष्टि रखने से सम्पूर्ण भारत प्रतीत होता है। अत: नदियाँ भाषाओं का और सागर भारतीय साहित्य का प्रतीक है।

बीज शब्द : भारतीय साहित्य, भारतीय भाषाएँ, अनेकता में एकता, भारत की महानता।

संसार में सभी प्राणियों का जन्म प्रकृति की गोद में ही हुआ है। इन प्राणियों में से मानव को उच्च मानते हैं। इस का कारण भाषा है ।क्यों कि यह प्राकृतिक समाज में मानव को अलग व विशेष दिखाती है। व्यक्ति के अंतर्निहित भावनाओं को अभिव्यक्त करने का सशक्त साधन है- भाषा। भगवान का दिया हुआ अमूल्य निधि है- भाषा। भाषा के बिना व्यक्ति गूँगा है, व्यक्ति के बिना समाज एवं समाज के बिना साहित्य। साहित्य का अस्तित्व समाज पर, समाज का व्यक्ति पर तथा व्यक्ति का अस्तित्व भाषा पर निर्भर है। साहित्य और समाज एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। नदी के दो किनारे हैं। एक के बिना दूसरे का महत्व नहीं होता। इस महत्व को सजीव रखती है- भाषा। नदी के पानी की तरह बहने वाली भाषा दोनों किनारे जैसे साहित्य और समाज को साथ लेकर चलने वाली

है। ऐसे कहा जाता है कि मानव (व्यक्ति) दिमाग से सोचता है। मेरा मत है कि व्यक्ति दिमाग से नहीं, दिमाग में भाषा से सोचता है। अत: दिमाग नाव है तो उसे चलाने वाला नाविक है- भाषा। बिना नाविक के नाव व बिना भाषा के दिमाग नहीं चलता। मानव बुद्धि जीव है। अपने विचार प्रकट करने वाली भाषा बुद्धि का प्रतीक है। इस विशाल भारत में ऐसी कई भाषाओं का जन्म हुआ है। "अनेकता में एकता " ही भारत की विशेषता है। इस विशेषता का झलक हम भारतीय साहित्य में भी देख सकते हैं। अत: भारतीय साहित्य केवल एक भाषा या बोली संबंधित नहीं है बल्कि अनेक भाषा और बोलियों के साहित्य का संगम है। भारतीय साहित्य का अस्तित्व भारत की सभी भाषाओं का अस्तित्व है। भारत की हर एक भाषा अपने साहित्य से समृद्ध है। एक माँ के लिए सभी बच्चे समान है, अत: भारत माँ के लिए सभी भाषाएँ अपने बच्चों के समान है। संसार की प्राचीन सभ्यताओं में से एक है- भारत की सभ्यता। तब से लेकर आज तक जितनी भी भाषाओं का जन्म हुआ है, उन सब में साहित्य की रचना हुई है और भारतीय साहित्य की परिधि विस्तृत हुई है। भारत की उत्तरी भाषाएँ आर्य परिवार के हैं व दक्षिणी द्रविड़ का। आर्य और द्रविड़ भिन्न नहीं है। इस का विवरण हमें प्राचीन साहित्य परंपरा से ज्ञात होता है। भारत की भाषाएँ एक ही वृक्ष की शाखाएँ हैं अत: भारतीय साहित्य को समृद्ध करने में सक्षम हैं। साहित्य का संबंध भाषा से नहीं बल्कि समाज से है। भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। साहित्य समाज के राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक जैसे सभी पहलुओं का चित्रण है। हर एक भाषा में इन सभी पक्षों का साहित्य है। भाषा अलग हो सकती है परन्तु साहित्य का विषय नहीं। यदि देखा जाये तो जब स्वतन्त्रता संग्राम चल रहा था तब साहित्य का विषय स्वतन्त्रता से संबंधित था। भारतीयों के मन में स्वतन्त्रता की भावना जगाने वाला साहित्य प्रत्येक भाषा में मिलती है।

भारतीय भाषाओं का साहित्यिक वृद्धि समान रुप से चलती आयी है। पूरब से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण तक भारत के मानचित्र में जितने भी भाषाएँ हैं उनके लिए समान गौरव प्राप्त है। उनके अस्तित्त्व में भी कोई भेद- भाव नहीं है। समाज की नीति है- परिवर्तन। परिवर्तन अभिवृद्धि का सूचक है। अगर समाज का परिवर्तन हुआ तो, मानो साहित्य का भी परिवर्तन हुआ है। हम प्रदेश की सीमा को निर्धारित कर सकते हैं - किन्तु साहित्य और भाषा की नहीं। आस - पास के प्रदेशों की भाषा में सामीप्य होती है अत: हम एक भाषा को दूसरी भाषा से पूर्णतः अलग नहीं कर सकते हैं। भारत में कई प्रदेश हैं। हर एक प्रदेश की अपनी विशेषता होती है, अलग भाषा भी। भाषा उस प्रदेश की आवश्यकताओं को मान्यता देती है। भारतीय साहित्य में एक भाषा के साहित्य का उतनी ही मान्यता होती है जितनी दूसरी भाषा साहित्य का। आन्तरिक रुप से खंडित दिखने वाला भारत, बाह्य रूप से अखंड है। जैसे - मानव शरीर एक है, इसके अन्तर्गत भाग अनेक। भारत को बहुभाषी देश कहते हैं। भाषाएँ अनेक हैं परन्तु भारतीयों की विचारधारा एक है। भारतीय साहित्य का मूल विषय अभिन्न है किन्तु भाषाएँ भिन्न हैं। भारत देश एक है लेकिन प्रदेश अनेक हैं। भारतीय संस्कृति एक है किन्तु आचार - विचार, खान - पान, रहन - सहन , एवं वेश - भूषा अलग हैं। भारत की भाषाएँ भिन्न हैं परन्तु उनका नींव एक है और समान अस्तित्त्व है। यह " भिन्नता में एकता " का सूत्र ही भारत का अस्तित्त्व है। यह भारत की महानता एवं गरिमा का प्रतीक है।

आदिकाल से आधुनिक काल तक भारत की प्रत्येक भाषा में साहित्य का सृजन समृद्ध रुप से हुआ है। साहित्य के परिप्रेक्ष्य में दृष्टिपात करने पर अवगत होता है कि - आदिकाल में भारतीय साहित्य की वृद्धि में भारतीय भाषाओं का हस्तक्षेप समान है। आदिकाल के साहित्य में युद्धों का वर्णन, हमें अधिक मिलती है। तब भी भाषाएँ भिन्न थी। परन्तु साहित्यिक विषय एक ही था। समाज में युद्धों के कारण उत्पन्न भय और निरुत्साह से मुक्ति और मन की शांति के लिए सब भगवान के शरण में आये हैं। अत: समाज की परिस्थितियाँ बदल गयी हैं। फिर साहित्य का विषय तत्कालीन राजा - महाराजाओं के विषय से हटकर भक्ति की ओर अग्रसर हुआ है। पूरे भारत में भक्ति साहित्य का विषय एक ही है, वह भक्ति है। परंतु भाषाएँ भिन्न हैं। आधुनिक भारत में, अर्थात् स्वतंत्रता संग्राम के समय भारतीय साहित्य ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए देश की एकता एवं अंग्रेजों को डटकर विरोध करने की शक्ति की अत्यंत आवश्यकता थी। भारत के प्रत्येक भाषा साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं से जनता को प्रेरित करने में अपना कर्तव्य भरपूर निभाया है। तब भारतीय साहित्य का विषय, भारतीयों को स्वतन्त्रता प्राप्ति की आवश्यकता समझाना था। समस्त भारतीय भाषाओं में देश भक्ति परक रचनाएँ ही अधिक हुई हैं। भारतीय साहित्य की परिधि को विस्तृत रूप देने में अनुवाद प्रक्रिया का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यह भारत की प्रादेशिक एकता को दृढ़ बनाती है। अखंडता भारत की गरिमा है। इस अखंडता को बनाये रखने में भारतीय भाषाएँ एवं साहित्य हमेशा सक्षम है।

निष्कर्ष :

भारत अपनी " भिन्नता में एकता " सूत्र के कारण विश्व के सभी देशों में अपना विशिष्ट पहचान बनाया है। भिन्नता में समानता को ढूंढने की विचारधारा भारत की गरिमा की शोभा बढ़ाती है। भारतवासी भाषा, धर्म, जाति एवं प्रांत के अनुसार विभिन्न हैं, परंतु देश के प्रति उनके मन में एक ही भावना है। भारत की अखंडता को बनाये रखने में भारतीय भाषाएँ कुशल थीं, कुशल हैं और हमेशा कुशल ही रहेंगी।

संदर्भ सूची :

1. गौतम, डॉ. मूलचन्द, भारतीय साहित्य, नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 2009.

2. पांडेय एवं अवस्थी, डॉ. लक्ष्मीकांत एवं डॉ. प्रमिला, इलाहाबाद : लोकभारती प्रकाशन, 2016.

3. भारत का गौरव : भारतीय साहित्य https://thehindi.in/indian-literature/